महान कृषि वैज्ञानिक डॉ. रामधन सिंह को भारत सरकार ने कभी सम्मानित नहीं किया

धमेन्द्र कनवाड़ी, सम्पादक, हरिभूमि

हिसार के कृषि विश्वविद्यालय में एक फार्म का नाम है डॉ. रामधन सिंह कृषि फार्म। कौन थे डॉ. रामधन सिंह और क्यों इनके नाम पर हिसार कृषि विश्वविद्यालय ने एक फार्म का नाम रख दिया, खेती में इनका भला क्या योगदान था? अगर आज की पीढ़ी से पूछा जाए तो अधिकतर तो इनका नाम भी नहीं जानते, इन्होंने काम क्या किया है यह भी नहीं पता होगा। ऐसा इसलिए है कि हरियाणा की धरती पर जो महान लोग पैदा हुए उनके बारे में लिखा नहीं गया न ही बताया गया।

राय बहादुर डॉ. रामधन सिंह के बारे में जानना इसलिए जरूरी है कि हाल ही में उनकी जयंती गुजरी है। डॉ. रामधन सिंह का जन्म एक मई 1891 को रोहतक जिले के किलोई गांव के एक साधारण से किसान परिवार में हुआ था। वह बचपन से ही पढ़ाई में बहुत तेज थे और अक्सर अपने पिता से सवाल किया करते थे कि बाबू ऐसे गेहूं का बीज ले आओ जो दोगुनी पैदावार दे, इस पर उनके पिता शंकर सिंह हंस कर कहते थे कि तू बड़ा होके बनाइए ऐसा बीज। डॉ. रामधन सिंह ने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने गांव किलोई से हासिल की। मिडिल और मैट्रिक की परीक्षा उन्होंने गवर्नमेंट हाईस्कूल स्कूल रोहतक से पास की। 1907 में डीएवी कॉलेज लाहौर में एडमिशन लिया और 1909 में पंजाब कृषि कॉलेज लायलपुर (जो अब पाकिस्तान के फैसलाबाद में हैं) में दाखिला लिया। इस कॉलेज में उसी साल तीन साल का डिप्लोमा शुरू हुआ। उन्होंने 1912 के पहले बैच में अपना डिप्लोमा पूरा किया। पटना यूनिवर्सिटी से 1919 में बीएससी की पढ़ाई की और आगे की पढ़ाई करने कैंब्रिज इंग्लैंड चले गए। कैंब्रिज उस समय राष्ट्रमंडल देशों में सबसे अग्रणी कृषि अनुसंधान का केंद्र था। डॉ. रामधन ने कैंब्रिज विश्वविद्यालय में प्राकृतिक विज्ञान में डिग्री हासिल की और कृषि में डिप्लोमा भी पूरा किया।

डिग्री करते ही उनके पास एक से एक बढ़कर नौकरी के अवसर थे लेकिन डॉ. रामधन सिंह को अपने पिता की बात याद आती थी कि तू बणा लिए ऐसा बीज जो दोगुनी पैदावार दे। वह अपनी मां का दिया हुआ खेस और लोई हमेशा साथ रखते थे ताकि किसान और घर के प्रति दायित्वों को हमेशा याद रख सकें।

डॉ. रामधन सिंह ने सबसे पहले सर अल्बर्ट हावर्ड के साथ काम किया जो जैविक खेती को बढ़ावा देने और गेहूं की कुछ नई किस्मों के चयन और प्रजनन की कोशिशों में जुटे थे। इस अवधि में उन्होंने पौधों के प्रजनन में गहरी दिलचस्पी ली क्योंकि किसान की किस्मत को बदलने का यही एक रास्ता उनको नजर आ रहा था। गरीब किसानों की स्थिति में सुधार के लिए फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने का जैसे उन पर भूत ही सवार था। डॉ. रामधन सिंह हुड्डा एक ऐसे कृषि वैज्ञानिक थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन खेतों में खपा दिया, या तो वह लैब में शोध करते या फिर खेतों में अपनी रिसर्च का परिणाम देखते। विदेश में पढ़ने के बावजूद ठेठ हरियाणवी में बातें करते और सिर पर खंडवा भी बांध कर रखते थे। वह कहा करते थे कि एक किसान को खुद को कृषि वैज्ञानिक बनाना होगा और एक कृषि वैज्ञानिक को खुद को किसान बनाना होगा तभी दोनों में तालमेल बन सकता है।

किसान परिवार से आने वाले डॉ. रामधन सिंह किसानों के बीच परंपरागत कृषि तरीका और पुरानी गरीबी के दुष्चक्र के आपसी संबंधों को अच्छी तरह पहचानते थे और इस दुष्चक्र को अपने तरीके से तोड़ना चाहते थे। यह तरीका बेहतर था कि अनाज की गुणवत्ता वाली और रोग प्रतिरोधी और अधिक उपज देने वाली फसलों की किस्मों का विकास किया जाए, यही उनके जीवन का लक्ष्य था। गेहूं और जौ पंजाब की तात्कालिक प्रमुख फसल थीं। डॉ. रामधन सिंह ने 1933-34 में न केवल तत्कालीन पंजाब में बल्कि दूर दूर तक गेहूं की फसलों पीवी 518 और पीवी 591 के साथ गेहूं की खेती का चेहरा बदल कर रख दिया। उनके द्वारा विकसित किया गया गेहूं पीवी 518 अपेक्षाकृत छोटे किस्म की फसल थी लेकिन मौसम की मार सहने की गजब की क्षमता उसमें थी। पीवी 591 एक अच्छी रोग प्रतिरोधी, अच्छी उपज और उत्कृष्ट चपाती बनाने के साथ सुनहरे चमकदार दाने वाली फसल थी। पीवी 591 अपनी बेहतर गुणवत्ता के साथ हमेशा अन्य गेहूं की फसलों की तुलना में ज्यादा मूल्यवान साबित हुई और इसकी वजह से आजादी से पहले के पूरे पंजाब में खेती का तरीका बदल गया, फिर इसे उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रांत, तत्कालीन सिंध प्रांत, राजस्थान और गुजरात के किसानों ने भी हाथों हाथ लिया। कनाडा, ब्राजील मैक्सिको, सोवियत संघ सहित अन्य देशों में इसकी भारी डिमांड हो गई थी और भारत ने उनको यह गेहूं निर्यात किया था।

डॉ. रामधन सिंह में गेहूं की दो उन्नत किस्में देने के बावजूद और भी उन्नत फसलें विकसित करने का जज्बा था। उन्होंने गेहूं की सी 217, 228, 250, 253, 273, 281 और 285 किस्में विकसित कीं। कई किस्में तो उनके रिटायरमेंट के बाद उनके नाम से जारी की गईं। गेहूं के बीजों को खरपतवार के बीजों से पूरी तरह से खत्म करने के लिए उन्होंने 1934 में एक रोटरी स्क्रीन मशीन बनाई जो न केवल किसानों के बीच बल्कि कृषि वैज्ञानिकों के बीच भी बहुत ज्यादा मकबूल और लोकप्रिय हुई।

डॉ. नॉरमन ई बोरलॉग एक प्रसिद्ध गेहूं प्रजनक और सीआईएमएमवाईटी के निदेशक थे। डॉ. हुड्डा के कामों पर उनकी गहरी नजर थी। 1961 में वह आईएआर आए थे और उन्होंने सोनीपत में डॉ. रामधन हुड्डा से उनके घर पर मुलाकात की थी। विदेशी होने के बावजूद उन्होंने भारतीय परंपरा निभाई और डॉ. रामधन सिंह का पैर छूते हुए कहा था कि आपने संसार को बेहतर किस्में देकर सौ करोड़ लोगों को भूखे मरने से बचा लिया। उस समय दोनों ही महान वैज्ञानिकों की आंखों में आंसू आ गए। डॉ. बोरलोग ने 1961-62 में जंग प्रतिरोधी मैक्सिकन गेंहू के साथ स्टोकी जापानी गेहू किस्म नौरिन 10 को पार करने और सोनेरा 63 व सोनेरा 64 जैसी उच्च उपज देने वाली गेहूं की किस्मों को विकसित करने में सफलता हासिल की थी। इस पर उन्हें दुनिया का सबसे प्रतिष्ठित नोबल पुरस्कार मिला और इसके बाद बोरलॉग ने डॉ. रामधन को एक विशेष सिक्का भेजा जो उन्होंने मैक्सिकन गेंहू को जारी रखने के लिए दुनिया को भूख के खिलाफ लड़ाई में डॉ. रामधन की भूमिका की सराहना करने के लिए बनवाया था।

डॉ. रामधन मूल रूप से अपने उत्कृष्ट गेहूं अनुसंधान के लिए जाने जाते हैं लेकिन चावल की समान रूप से उन्नत किस्मों का भी विकास किया। पंजाब प्रांत में बहुत ही कम वर्षा होती थी यही वजह थी कि यह इलाका परंपरागत रूप से चावल उगाने वाला नहीं था। राज्य के मैदानी और पहाड़ी दोनों इलाकों में सिंचित अवस्था में चावल उगाया जा सकता था। उनके द्वारा विकसित चावल की आठ किस्मों में से पांच बासमती किस्में थीं। बासमती 370, चावल 370 और झोना 349, मोंकस 7 और 41 पाल्मे प्रत्यक्ष 246 मैदानी इलाकों के लिए थी। राम जवैन 100, फूल पतास-72 और लाल ननकंद 41 पर्वतीय क्षेत्रों के लिए थी। जंगली चावलों की समस्या से लड़ने के लिए आमतौर पर कांगड़ा जिले में उगाए जाने वाले पेडी पत्ते वाले चावल क्रॉस ब्रीडिंग प्रयासों के परिणाम थे। बासमती 370 चावल इसकी उत्कृष्ट गुणवत्ता और सुगंध के कारण लोकप्रिय हैं और पश्चिमी देशों में आज भी इसकी भारी डिमांड है। अपने समय में बासमती किस्म विकसित करके डॉ. रामधन सिंह ने तत्कालीन भारत के पंजाब और पाकिस्तान को बासमती जर्म प्लाज्म का मालिक बनाया।

रामधन सिंह ने बचपन से ही देखा था कि किसान जौ की रोटी भी खाते हैं इसलिए उन्होंने जौ की उन्नत किस्में जैसे टी4, टी5, सी138, सी141 और सी155 विकसित कीं जो सीमित सिंचाई संसाधन और नमक प्रभावित क्षेत्रों में उपज के लिए आज भी अनुकूल है। इन किस्मों ने निम्न आय वर्ग के किसानों की भारी मदद की क्योंकि यह खाद्य निम्न आय वर्ग के लोगों का मुख्य आहार हुआ करता था। उन्होंने जौ के माल्ट के रूप में प्रसंस्करण के लिए 1933 में एक प्लान बनाया था और इस प्रकार डॉ. रामधन सिंह ने अनाज की उन किस्मों को विकसित करने की कोशिश की जो प्रसंस्करण के लिए कृषि उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप हों और किसानों के अधिक रोजगार व आय के अवसर पैदा हो सकें।

डॉ. सिंह का शोध सिर्फ अनाज तक सीमित नहीं था उन्होंने दालों की भी उन्नत किस्मों पर काम किया जिनकी उन दिनों आमतौर पर आपूर्ति कम होती थी। उन्होंने मूंग की दो किस्में बनाई मूंग नंबर 54 और 305। उन्होंने कई फसलों की नई उन्नत किस्में विकसित करके गेहूं, जौ, चावल और दालों की गुणवत्ता सुधार में अपना अहम योगदान दिया, उन्होंने जितनी ब्रीड बनाई शायद दुनिया के किसी ब्रीडर के नाम इतनी ब्रीड नहीं हैं।

डॉ. रामधन सिंह 1947 में सेवानिवृत्त हो गए लेकिन अपने काम को उन्होंने जारी रखा। वह आठ वर्षों तक रोहतक के कई जाट शैक्षणिक संस्थाओं के अध्यक्ष रहे और उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत करने का काम किया। इन शिक्षण संस्थाओं के नियमों और विनियमों को सुसंगठित किया जो आज भी उनके काम आ रहे हैं। वह फरवरी 1971 से मई 1974 तक हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार प्रबंधक बोर्ड के अध्यक्ष रहे। वह विवि के फार्मों का निरंतर दौरा करते थे और क्रॉस बनाने व वांछित सामग्री के लिए प्रजननकों से

बातचीत करते थे। खंडवा बांधे कृषि वैज्ञानिक से बातचीत करते हुए तो कई बार किसान भी गच्चा खा जाते थे कि यह आदमी कोई किसान नहीं बल्कि एक महान कृषि वैज्ञानिक डॉ. रामधन सिंह हुड्डा हैं।

उन्होंने हमेशा उन युवा वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित किया जिन्होंने खेती के विकास में मेहनत की, कई उच्च उपज वाली किस्मों को विकसित किया जिससे फसल की पैदावार में वृद्धि हुई। विशेष रूप से गेहूं की बहुत अधिक उपज देने वाली किस्म सी 306 को 1965 में सीमित सिंचाई के लिए और डब्ल्यूएच 147 को मध्यम उर्वरक और सिंचाई की स्थिति के लिए 1975 में विकसित किया गया था। इन दोनों में ही डॉ. रामधन सिंह द्वारा विकसित सामग्री शामिल थी। इन दोनों ही किस्मों को देश के विभिन्न राज्यों के बड़े हिस्से में आज भी उगाया जाता है और गेहूं के उत्पादन में हरित क्रांति लाने का योगदान इन्ही दो किस्मों का है। ये किस्में आज भी हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में बेहद लोकप्रिय हैं।

डब्ल्यूएच 147 एक बार पाकिस्तान में पांच लाख हेक्टेयर में उगाई गई थी जिसने पाकिस्तान में खाद्य संकट से उबरने में अहम योगदान दिया था। सी 306 गेहूं की ऐसी किस्म है जो अपने चमकीले और मोटे दाने के लिए जानी जाती है और बाजार में उच्च दाम पर बिकती है, इसकी भारी मांग रहती है।

डॉ. रामधन सिंह भारत के महान सपूत हैं उनका निधन 17 अप्रैल 1977 को हुआ था। भारत के कृषि विज्ञान और किसानों की सेवा के लिए अंग्रेज हुकूमत ने उन्हे राय बहादुर के खिताब से नवाजा जबकि भारत सरकार के उन्हें किसी उपाधि के काबिल नहीं समझा। 1961 में पाकिस्तान के लायलपुर कृषि कॉलेज में स्वर्ण जयंती समारोह में भाग लेने के लिए उन्हें आमंत्रित किया गया था। पाकिस्तान के राष्ट्रपति मो. अय्यूब खान जब डॉ. रामधन सिंह से मिले तो हाथ मिलाने के बजाय उन्होंने उनको गले से लगा लिया और कहा कि डॉक्टर साहब अगर आप नहीं होते तो पाकिस्तान में गेहूं और चावल भी नहीं होता और पाकिस्तान के लोग भूखे रह जाते।

मोहम्मद अयूब खान ने डॉ. रामधन सिंह को राष्ट्रपति गोल्ड मैडल से सम्मानित किया, वह यह सम्मान पाने वाले पहले भारतीय बने। राष्ट्रपति अय्यूब खान ने डॉ. रामधन सिंह को सम्मान के साथ पाकिस्तान में रहने और कृषि अनुसंधान को आगे बढ़ाने की पेशकश की लेकिन उन्होंने कहा कि अय्यूब साहब मैं आखिरी सांस अपने देश की मिट्टी में ही लेना चाहूंगा आपके देश के जो कृषि वैज्ञानिक हैं उनको प्रोत्साहन दें हर कोई डॉ. रामधन सिंह बन सकता है। तत्कालीन केंद्रीय कृषि मंत्री डॉ. सी सुब्रामण्यम ने पांच अगस्त 1965 को पंजाब कृषि विश्वविद्यालय में गेहूं पर अखिल भारतीय गेहूं अनुसंधान संगोष्ठी में अपने संबोधन में कहा कि पीवी 591 जो 30 के दशक में विकसित हुआ था अभी भी सबसे ज्यादा बोया जाता है और पूरे भारत को डॉ. रामधन सिंह का शुक्रगुजार होना चाहिए। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के ओल्ड ब्वॉयज एसोसिएशन ने उनको1964 में रोल ऑफ ऑनर से सम्मानित किया। भारत में सबसे शानदार गेहूं के प्रजनक के मान्यता के रूप में पंजाब विश्वविद्यालय ने उन्हें 23फरवरी 1970 को एक विशेष आयोजन में डॉ. ऑफ साइंस की मानद उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया और लुधियाना परिसर में प्लांट ब्रीडिंग प्रयोगशाला का नाम उनके नाम पर रखा। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने डॉ. रामधन सिंह के नाम पर आवासीय परिसर बनाया है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने उन्हें डीएससी की मानद उपाधि प्रदान की थी। सात अप्रैल 1973 को डॉ. रामधन सिंह को विवि के कुलाधिपति एचएयू के संस्थापक एएल फ्लेचर ने भी सम्मानित किया था। एएल फ्लेचर उनके बहुत बड़े प्रशंसक थे। एचएयू के प्लांट ब्रीडिंग यूनिट के सबसे मेधावी छात्र को दीक्षांत समारोह में राय बहादुर डॉ. रामधन सिंह स्वर्ण पदक प्रदान किया जाता है। 4000 एकड़ के बीज उत्पादन फार्म का नाम भी डॉ. रामधन सिंह बीज फार्म सीसीएचएयू हिसार रखा गया है। किलोई गांव में उनके नाम पर डॉ. रामधन सिंह स्पोर्ट्स स्टेडियम बना हुआ है।

अंत में डॉ. रामधन सिंह की महानता का एक किस्सा: 1965 में प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने डॉ. रामधन सिंह को किसी भी राज्य का राज्यपाल बनने का प्रस्ताव दिया था और कहा था कि डाक्टर साहब आप मन करे तो उस राज्य में चले जाइए। प्रस्ताव सविनय ठुकराते हुए डॉ. रामधन सिंह ने कहा था कि शास्त्री जी मैं एक वैज्ञानिक के तौर पर देश के किसानों का भला कर सकता हूं और जीवन भर यही करता रहूंगा, राज्यपाल बनने के लिए बहुत से लोग लाइन में होंगे। डॉ. रामधन सिंह के बारे में युवा पीढ़ी को जानना बहुत जरूरी है।